पल में आता पल में जाता पल में खेल रचाता है लिरिक्स

पल में आता पल में जाता,
पल में खेल रचाता है,
उस पल की कोई गम नहीं करना,
हरि कैसा रूप दिखाता है।bd।

किस पल में वह बाग लगाता,
किस पल फूल खिलाता है,
किस फल में वह सुगंध भरता,
किस पल में सूख जाता है,
पल मे आता पल मे जाता,
पल में खेल रचाता है,
उस पल की कोई गम नहीं करना,
हरि कैसा रूप दिखाता है।bd।

जल कि वह एक बूंद बनाता,
बूंद में बीज लगाता है,
अण्ड बनाकर पण्ड बनाता,
पण्ड माई प्राण बसाता है,
पल मे आता पल मे जाता,
पल में खेल रचाता है,
उस पल की कोई गम नहीं करना,
हरि कैसा रूप दिखाता है।bd।

त्रिवेणी की तीरा उपर,
साधु माला भजता है,
रमता खेलता जग के माई,
कोई कोई बिरला पाता है,
पल मे आता पल मे जाता,
पल में खेल रचाता है,
उस पल की कोई गम नहीं करना,
हरि कैसा रूप दिखाता है।bd।

शंभू नाथ जी सतगुरु मिलिया,
गुरुओं का उपदेश बताता है,

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

जात पात गांव नहीं ठाना,
यू शंकर भजन में गाता है,
पल मे आता पल मे जाता,
पल में खेल रचाता है,
उस पल की कोई गम नहीं करना,
हरि कैसा रूप दिखाता है।bd।

पल में आता पल में जाता,
पल में खेल रचाता है,
उस पल की कोई गम नहीं करना,
हरि कैसा रूप दिखाता है।bd।

गायक – भेरुपुरी जी गोस्वामी।
प्रेषक – मदन मेवाड़ी।
8824030646

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com